Result Mitra Daily Current Affairs

Topic-1

कृषि क्षेत्र में कार्बन ट्रेडिंग तंत्र

- कार्बन ट्रेडिंग के तहत चयनित क्षेत्रों में से कृषि क्षेत्र एक है।
- सरकार ने दिसंबर 2023 में कार्बन ट्रेडिंग तंत्र के कार्यान्वयन के लिए कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग योजना को अधिसूचित किया।
- इस योजना के द्वारा कार्बन ट्रेडिंग के तहत किसानों एवं किसानों से संबंधित संस्थाओं को कार्बन क्रेडिट प्रमाणपत्र जारी किए जाएंगे।
- भारत में कृषि क्षेत्र के लिए स्वैच्छिक कार्बन बाजार (वीसीएम) को बढ़ावा देने के लिए कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने एक रूपरेखा तैयार की है

इस रूपरेखा का उद्देश्य :–

- छोटे और सीमांत किसानों को कार्बन क्रेडिट लाभ प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।
- किसानों को जब कार्बन बाजार से परिचित कराया जाएंगा तो इससे उनकी आय में वृद्धि होगी।
- कार्बन बाजार से परिचित होने के साथ-साथ पर्यावरण के अनुकूल कृषि पद्धतियों को किसान अधिक तेजी से अपनाने के लिए प्रतीत होंगे।
- 4.किसान टिकाऊ कृषि पद्धतियों अपनाने के लिए प्रेरित होंगे।

- किसान कार्बन क्रेडिट से अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकेंगे
- किसान मिट्टी, पानी, जैव-विविधता आदि जैसी प्राकृतिक पूंजी के संदर्भ में अन्य कृषि-पारिस्थितिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

Topic-2

Bhojshala Survey Report

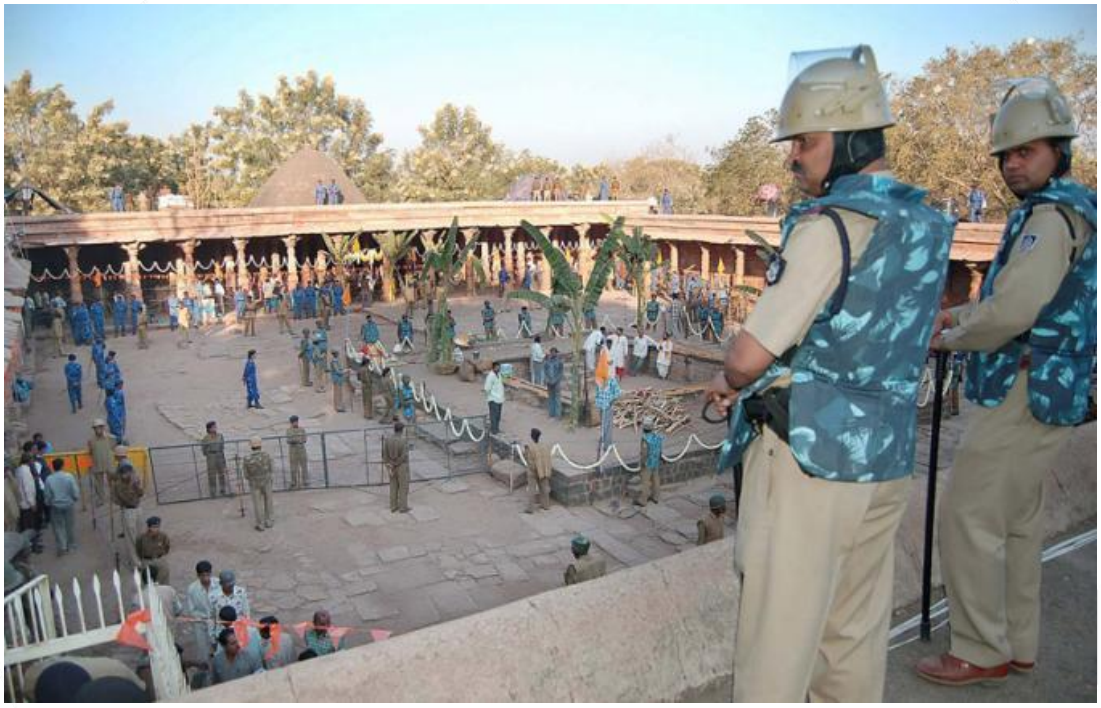

- चर्चा में क्यों :– हाल ही में भोगशाला पर हिंदू , मुस्लिम के बाद अब जैन धर्म ने भी अपना दावा कर दिया है।
- जैन समाज ने सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दायर की है जिसका उद्देश्य भोजशाला पर अपना दावा करना है।
- हिंदू और मुस्लिम पक्ष की ओर से पहले ही दो याचिकाएं सुप्रीम कोर्ट में लगाई गई हैं.
- जैन समाज के दावे का आधार :– जैन समाज का दावा है कि भोजशाला में 1875 में खुदाई के दौरान जैन यक्षिणी अंबिका की मूर्ति निकली थी.
- यह मूर्ति वर्तमान में ब्रिटिश म्यूजियम में सुरक्षित है.
- जैन समाज ने दावा किया है कि जैन यक्षिणी अंबिका की मूर्ति के साथ शिलालेख भी प्राप्त हुए है बह भी सुरक्षित है।
- यह शिलालेख इस बात की पुष्टि करते हैं कि अंबिका देवी का संबंध जैन धर्म से है
- इसी मूर्ति को हिंदू समाज वाग्देवी सरस्वती कह रहा है.
- हिंदुओं का ये दावा यथार्थ में सत्य नहीं है. इसके अलावा अभी खुदाई के दौरान जैन तीर्थंकरों, देवी-देवताओं की मूर्तियां, जैन तीर्थंकरों से संबंधित लांछन, कछुआ, बंदर, शंख, जैन शिल्प और जैन शिलालेख भी मिले हैं.

- इन तर्कों के आधार पर भोजशाला पर जैन समाज का दावा उचित है.
- हाल ही में मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के आदेश के अनुसार भोजशाला का आर्कियोलॉजिकल सर्वे आफ इंडिया के द्वारा सर्वे किया गया और 151 पेजों की एक रिपोर्ट हाई कोर्ट के समस्त प्रस्तुत की गई।
- क्यों प्रस्तुत की गई है रिपोर्ट :– भोजशाला के ऊपर हिंदू तथा मुस्लिम पक्ष अपना अपना धार्मिक स्थान होने का दावा करते हैं इसी मामले की सुनवाई मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय में चल रही है

- पूरा मामला :–

- भोजशाला परिसर का संबंध राजा भोज से माना जाता है जिन्होंने 1000-1055 ई. में शासन किया।
- हिंदू पक्ष का कहना है की इन्हीं के द्वारा भोजशाला परिषद को बनवाया गया था और यहीं पर देवी वाग्देवी (सरस्वती) का मंदिर है। दूसरी ओर, मुस्लिम पक्ष भोजशाला को कमाल मौलाना मस्जिद कहते हैं।
- इसी भोजशाला का अध्ययन करने के लिए मध्य प्रदेश हाई कोर्ट के द्वारा ASI को आदेश दिए गए थे जिसमें उन्होंने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।
- ASI ने 151 पन्नों की सर्वे रिपोर्ट हाईकोर्ट में प्रस्तुत की जिसने कई खुलासे किए गए है।
- किए गए सर्वे और उत्खनन के दौरान देवी-देवताओं की 37 मूर्तियां मिलीं जिससे इस स्थल के ऐतिहासिक होने के प्रमाण मिलते हैं।
- हाई कोर्ट में इस मामले की आगे की सुनवाई 22 जुलाई को होगी।

- रिपोर्ट में क्या क्या उल्लेख
- खोदाई में 1700 से ज्यादा पुरावशेष मिले हैं।
- इनमें देवी-देवताओं की 37 मूर्तियां भी शामिल हैं।
- खुदाई में मिली सबसे खास मूर्ति मां वाग्देवी की है जो खंडित अवस्था में है।
- इनमें भगवान श्रीकृष्ण, जटाधारी भोलेनाथ, हनुमान, शिव, ब्रह्मा, वाग्देवी, भगवान गणेश, माता पार्वती, भैरवनाथ आदि देवी-देवताओं की मूर्तियां शामिल हैं।

- भोजशाला मंदिर-कमाल मौला मस्जिद परिसर क्या है:–
- भोजशाला मंदिर- जिसे कमाल मौला मस्जिद परिसर के रूप में भी जाना जाता है मूल रूप से 11वीं शताब्दी ई. में निर्मित किया गया था।
- यह देवी सरस्वती का मंदिर था जिसे परमार राजा भोज द्वारा निर्मित कराया गया था।
- मुस्लिम आक्रांताओं के द्वारा इस मंदिर को मस्जिद में परिवर्तित किया गया।
- इस स्मारक को मंदिर से मस्जिद में परिवर्तित करने के स्पष्ट साक्ष्य यहां पर आज भी देखने को मिल जाते हैं
- इस स्थान पर स्मारक में संस्कृत और प्राकृत साहित्यिक कृतियों के साथ अंकित कुछ स्लैब मौजूद हैं।
- लोक प्रचलित मान्यताओं के अनुसार राजा भोज एक प्रसिद्ध कल और साहित्य के संरक्षक थे इन्होंने एक पाठशाला की स्थापना की थी जिसे अब भोजशाला के नाम से जाना जाता है।

Result Mitra TM

- यह स्थान वर्तमान में हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्म के लिए पवित्र है जहां हिंदू प्रत्येक मंगलवार को मंदिर में पूजा अर्चना करते हैं तो बही मुस्लिम समुदाय के लोग प्रत्येक शुक्रवार को नमाज़ पढ़ते हैं।

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI)

- इसकी स्थापना वर्ष 1861 में अलेक्जेंडर कनिंघम द्वारा की गई थी।
- अलेक्जेंडर कनिंघम ASI के पहले महानिदेशक थे।
- अलेक्जेंडर कनिंघम को ही "भारतीय पुरातत्त्व का जनक" माना जाता है।
- यह संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत कार्य करता है
- यह सांस्कृतिक विरासत के पुरातात्त्विक अनुसंधान और संरक्षण के लिये एक महत्वपूर्ण और प्रमुख संगठन है।
- भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण भारत में 3650 से अधिक पुरातात्त्विक स्थलों, प्राचीन स्मारकों और राष्ट्रीय महत्त्व के अवशेषों का प्रबंधन करता है।
- पुरातत्त्व सर्वेक्षण के कार्य :– पुरावशेषों का सर्वेक्षण करना, पुरातात्त्विक स्थलों की खोज तथा उत्खनन, संरक्षित स्मारकों का संरक्षण एवं रखरखाव आदि शामिल हैं।

Result Mitra

Topic-3

अहोम युग के 'मोइदम्स'

- चर्चा में क्यों :– हाल ही में यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में अहोम युग के 'मोइदम्स' को शामिल किया गया है।
- किसने की सिफारिश :– अंतर्राष्ट्रीय स्मारक एवं स्थल परिषद (ICOMOS) ने
- किन्हें सामिल करने की :– असम के अहोम युगीन 'मोइदम' को

Result Mitra

'मोइदम' :–

- इनका संबंध असम के अहोम राजवंश से है
- यह कब्र नुमा टीले हुआ करते थे
- इनका प्रयोग अहोम राजवंश के राजाओं, रानियों एवं शाही परिवार के लोगों के लिए कब्रगाह के रूप में लिया जाता था।
- 'मोइदम' की प्राप्ति हमे ऊपरी असम के जिलों से होती हैं।
- इनकी तुलना मिस्र के पिरामिड से भी की जाती है।

'मोइदम' की स्थापत्य संबंधी विशेषताएं:

- मोइदम का आकार एक साधारण टीले से एक छोटी पहाड़ी जितनी ऊंचाई तक हो सकता है।
- मोइदम का आकार इस बात पर निर्भर करता था की दफनाए गए व्यक्ति की हैसियत कितनी है।

- उसका दर्जा कितना बड़ा है , उसकी सत्ता कितने बड़ी है , और उसके पास संसाधनों की कितनी उपलब्धता है।
- 'मोइदम' का बाहरी भाग अर्धगोलाकार हुआ करता था है।

मोइदम में तीन प्रमुख विशेषताएं पाई जाती है :–

- एक गुंबदाकार कक्ष हुआ करता जिसके बीच में एक ऊंचा चबूतरा बनाया जाता , उसका प्रयोग शव को को रखने के लिए किया जाता।
- ईट की जो आरंभिक संरचना होती इसे चाउ-चाली कहा जाता।
- ईट की आरंभिक संरचना को मिट्टी का एक अर्धगोलाकार टीला ढके हुए होता। ईट की इस संरचना के ऊपर प्रतिवर्ष चढ़ावा चढ़ाएं जाने की परंपरा थी।
- टीले के आधार को घेरे हुए चारों ओर एक अष्टकोणीय दीवार हुआ करती तथा इसमें प्रवेश करने के लिए पश्चिम में एक मेहराबदार प्रवेश द्वार हुआ करता ।
- मृतक व्यक्ति के साथ कुछ वस्तुओं को भी रखा जाता जैसे राजसी प्रतीक चिन्ह; हाथी दांत लकड़ी या लोहे से बनी वस्तुएं; सोने के आभूषण।
- अहोम राजवंश का आधिकारिक धर्मवैधानिक ग्रंथ चांगरंग फुकन था जिससे हमे 'मोइदम' के निर्माण में उपयोग होने वाली सामग्रियों की जानकारी प्राप्त होती है।
- 'मोइदम' के निर्माण में लकड़ी, पत्थर और पकी हुई ईटें का प्रयोग किया जाता।

अहोम साम्राज्य

- इस वंश की स्थापना 13वीं शताब्दी में हुई।
- संस्थापक :– छौ लुंग सुकफा ने
- पहली राजधानी :– पटकाई पहाड़ियों की तलहटी में स्थित चराईदेव में स्थापित की।
- अंतर्राष्ट्रीय स्मारक एवं स्थल परिषद ICOMOS यूनेस्को की विश्व धरोहर समिति का एक सलाहकार निकाय है।
- *ICOMOS के कार्य :–* यूनेस्को के विश्व धरोहर कन्वेंशन के कार्यान्वयन के लिए कार्य करना।

ताजमहल	1983	आगरा, उत्तर प्रदेश
आगरा का किला	1983	आगरा, उत्तर प्रदेश
एलोरा गुफाएं	1983	महाराष्ट्र
अजंता गुफाएं	1983	महाराष्ट्र
सूर्य मंदिर	1984	ओड़ीसा
महाबलीपुरम में स्मारकों का समूह	1984	तमिलनाडू
काजीरंगा नेशनल पार्क	1985	असम
केवलादेव नेशनल पार्क	1985	राजस्थान
मानस वन्यजीव अभयारण्य	1985	असम
गोवा के चर्च और कॉन्वेंट	1986	गोवा

Result Mitra TM

खजुराहो स्मारकों का समूह	1986	मध्यप्रदेश
हम्पी में स्मारकों का समूह	1986	कर्नाटक
फतेहपुर सीकरी	1986	आगरा उत्तरप्रदेश
एलिफेंटा गुफाएं	1987	महाराष्ट्र
ब्रेट लिविंग चोल मंदिर	1987	तमिलनाडू

Topic-4

लिथियम संसाधनों की खोज

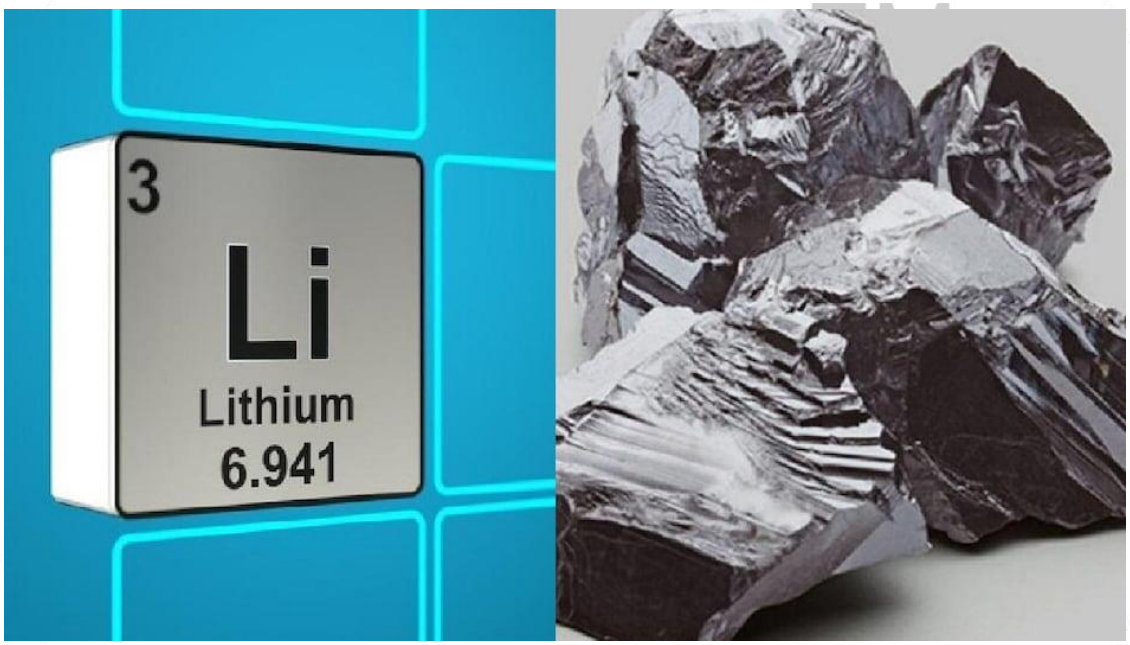

- चर्चा में क्यों :– हाल ही में लिथियम संसाधन के नए निक्षेप कर्नाटक के मांड्या और यादगिर जिलों में प्राप्त हुए है।
- किसने पुष्टि की :– परमाणु खनिज अन्वेषण और अनुसंधान निदेशालय ने
- मांड्या जिले में लिथियम के भंडार का कुल अनुमान 1,600 टन है।

सर्वाधिक लिथियम भंडार वाले देश :–

- बोलीविया :– 23 मिलियन टन
- अर्जेंटीना :– 22 मिलियन टन
- चिली :– 11 मिलियन टन
- ऑस्ट्रेलिया :– 8.7 मिलियन टन
- चीन :– 6.8 मिलियन टन

- भारत :– 5.9 मिलियन टन

यह लिथियम भंडार क्यों महत्वपूर्ण है :–

- वर्तमान में भारत लिथियम के लिए चीन और हांगकांग पर निर्भर है। भारत में लिथियम के भंडार प्राप्त होने से हमारी निर्भरता अन्य राष्ट्रों पर कम होगी।
- ग्रीन ऊर्जा अपनाने में सहयोग मिलेगा।
- ऊर्जा भंडारण आवश्यकताओं को पूरा करने में आसानी होगी।
- इलेक्ट्रॉनिक वाहन और ऑटोमोबाइल उद्योग के विकास में तेजी आएगी।

लिथियम :–

- इसे सफेद सोना (व्हाइट गोल्ड) भी कहा जाता है।
- सभी धातुओं में इसका घनत्व सबसे कम है।
- यह नरम और चांदी जैसी सफेद क्षारीय विषाक्त धातु के रूप में होती है।

लिथियम के उपयोग :–

- इसका प्रयोग मुख्य रूप से मोबाइल फोन, इलेक्ट्रिक वाहन आदि के लिए रिचार्जेबल ली-आयन बैटरी बनाने में किया जाता है
- किसी भी वस्तु की मजबूती बढ़ाने तथा वजन हल्का रखने के लिए लिथियम को एल्यूमीनियम और मैग्नीशियम के साथ मिलाया जाता है। इसका उपयोग विमान के पार्ट्स बनाने, साइकिल फ्रेम, एयर कंडीशनिंग, इंडस्ट्रियल ड्राइंग सिस्टम और ग्लास सिरेमिक में और हाई-स्पीड ट्रेन बनाने में किया जाता है।

TM Result Mitra